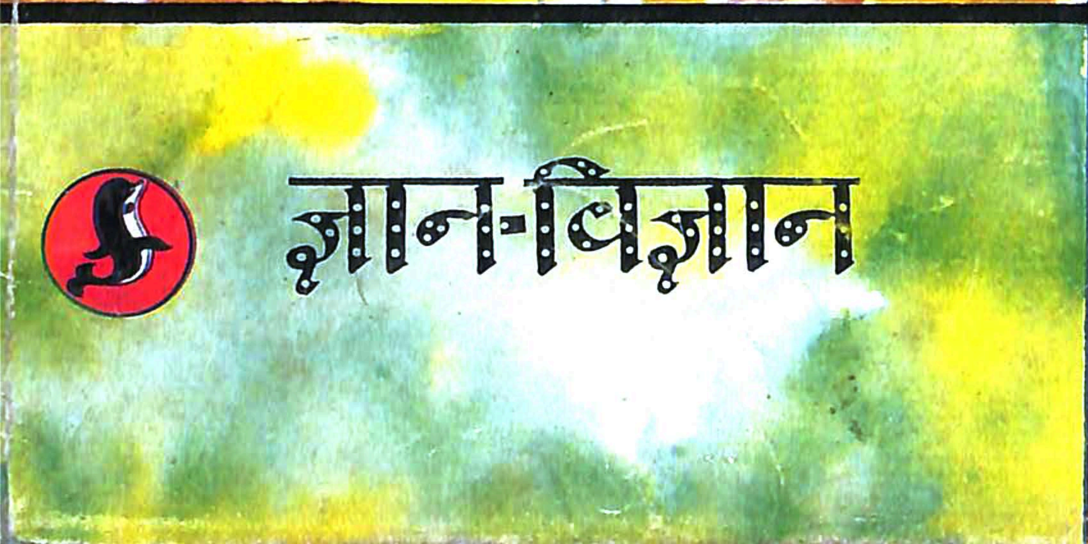
चार उस्ताद











ज्ञान-विज्ञान

चार उस्ताद

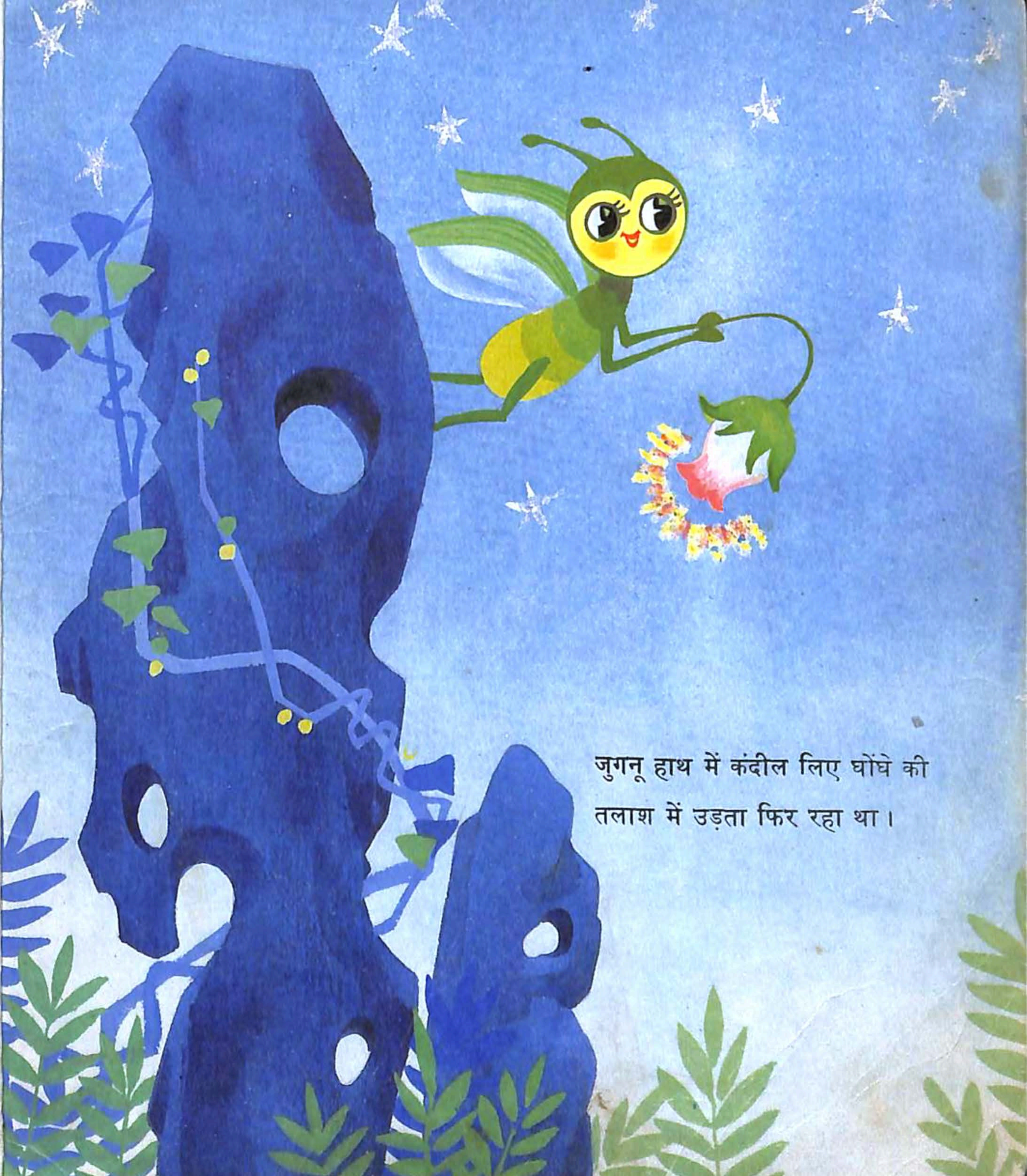
शब्दांकन : लिन सुङइङ
चित्रांकन : छी रुइछङ च्वाङलिङ

डॉलफिन प्रकाशन पेइचिङ

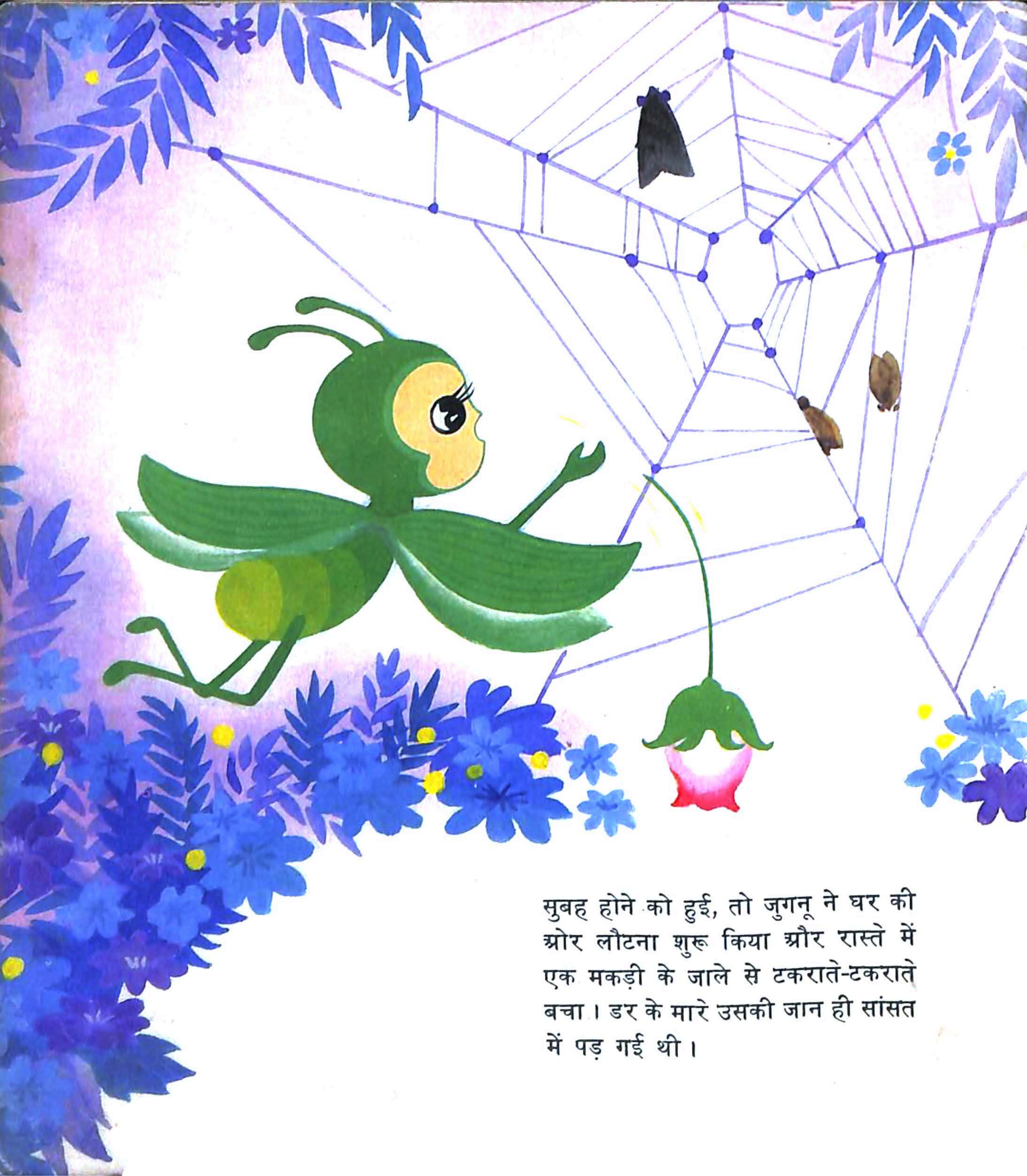
प्रथम संस्करण 1988

ISBN 7-80051-121-9

प्रकाशक: **डॉलफिन प्रकाशन**
24 पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ
वितरक: **चीन अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार निगम**
पो. आ. बाक्स 399, पेइचिङ
चीन लोग गणराज्य में मुद्रित



जुगनू हाथ में कंदील लिए घोंघे की तलाश में उड़ता फिर रहा था।



सुबह होने को हुई, तो जुगनू ने घर की ओर लौटना शुरू किया और रास्ते में एक मकड़ी के जाले से टकराते-टकराते बचा। डर के मारे उसकी जान ही सांसत में पड़ गई थी।



जुगनू ने मकड़ी के जाल में कई जीड़े फंसे देखे, तो पूछा : "क्या ये सभी तुम्हारी खाद्य-सामग्री है क्या ?" मकड़ी हंस दी।



इसी समय एक पतंगा उड़ता अचानक जाल में फंस गया। मकडी फौरन उसके पास पहुंची और उसे काट खाया। बेचारे पतंगे के प्राण निकल गए।





मकड़ी ने कहा : "इसी तरह मैं इस जाल से कीट-पतंगे पकड़कर अपना खाना जुटाती हूं।"

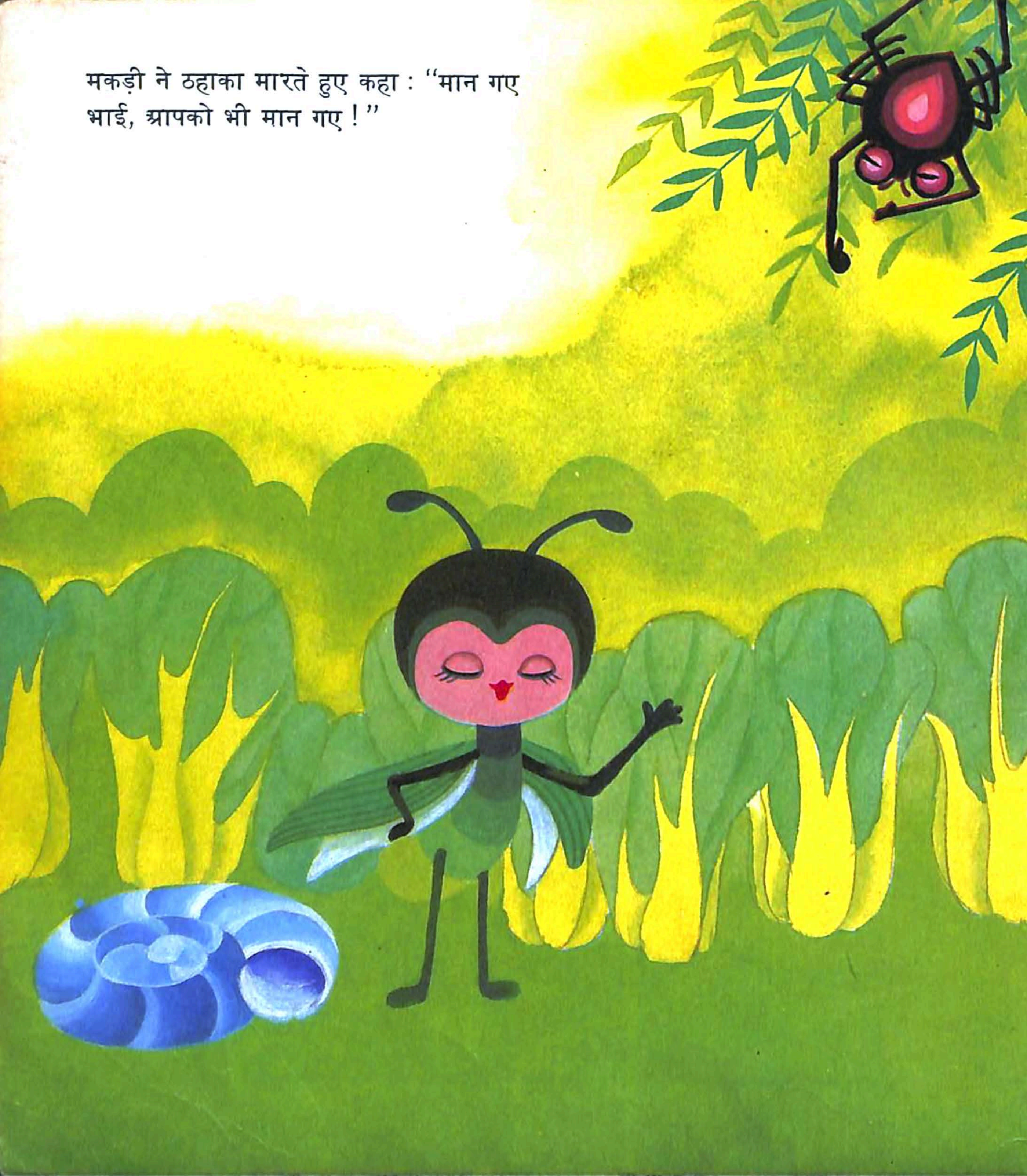


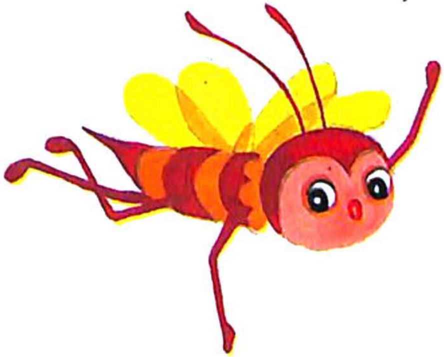
सब्जी के खेत में एक घोंघा हरी हरी सब्जी कुतर रहा था। जुगनू उड़कर उसके पास जा पहुंचा और उसने उसे दबोच लिया।



जुगनू ने घोंघे को जोर से काट खाया, ग्रौर गर्व से कहने लगा। "देखो, यह रही मेरी खाद्य-सामग्री।"

मकड़ी ने ठहाका मारते हुए कहा : "मान गए भाई, आपको भी मान गए !"





सब्जी के बाड़े में एक बन्द-गोभी पर कीड़ा लगा था। एक भिड़ उड़ता हुआ आया, कहने लगा : "देखो यह है मेरी खाद्य-सामग्री !"





दरअसल, कुछ दिन पहले यह कीड़ा एक बन्द-गोभी खा रहा था। बन्द गोभी बेचारी मारे दर्द के चिल्ला रही थी।

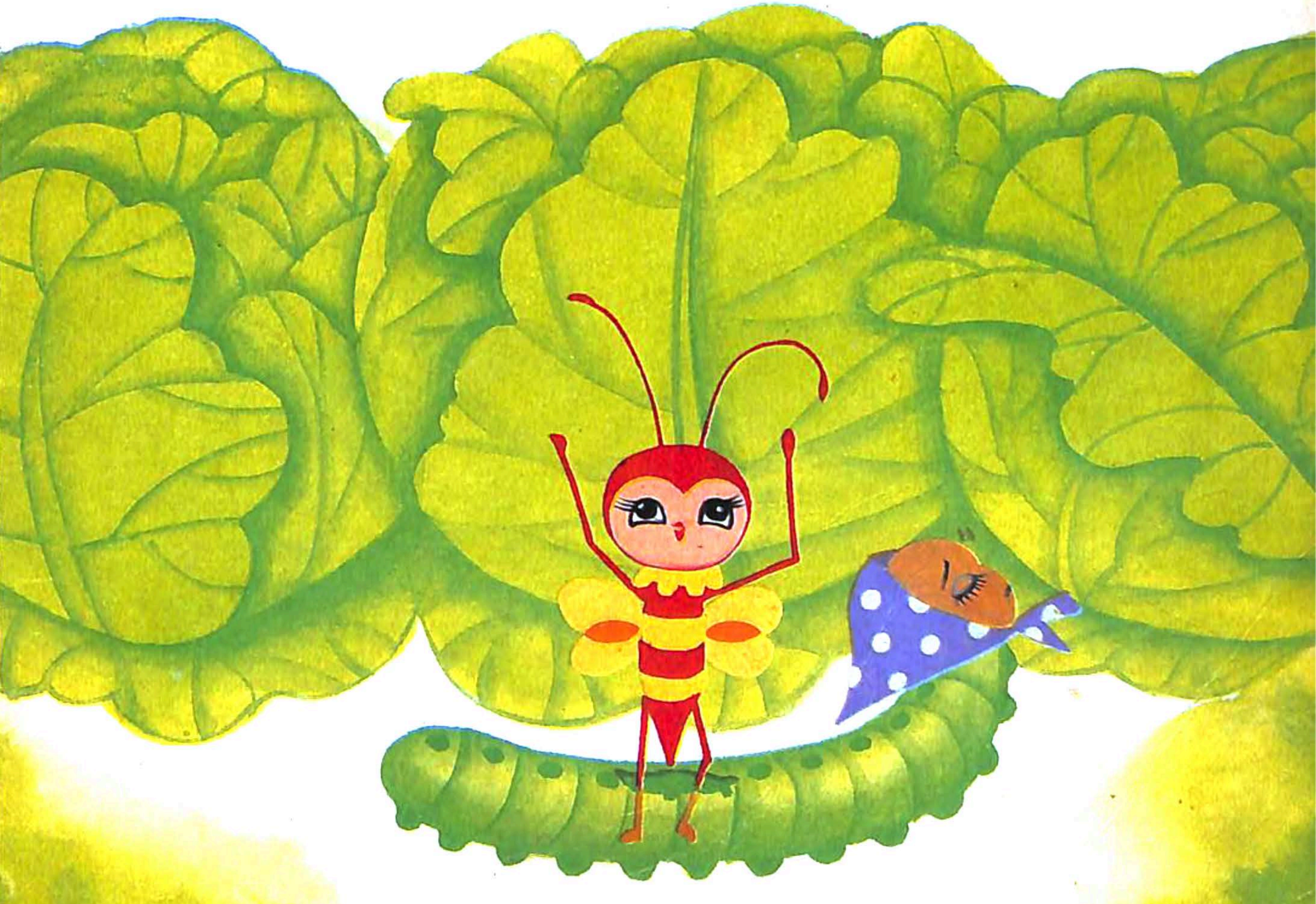


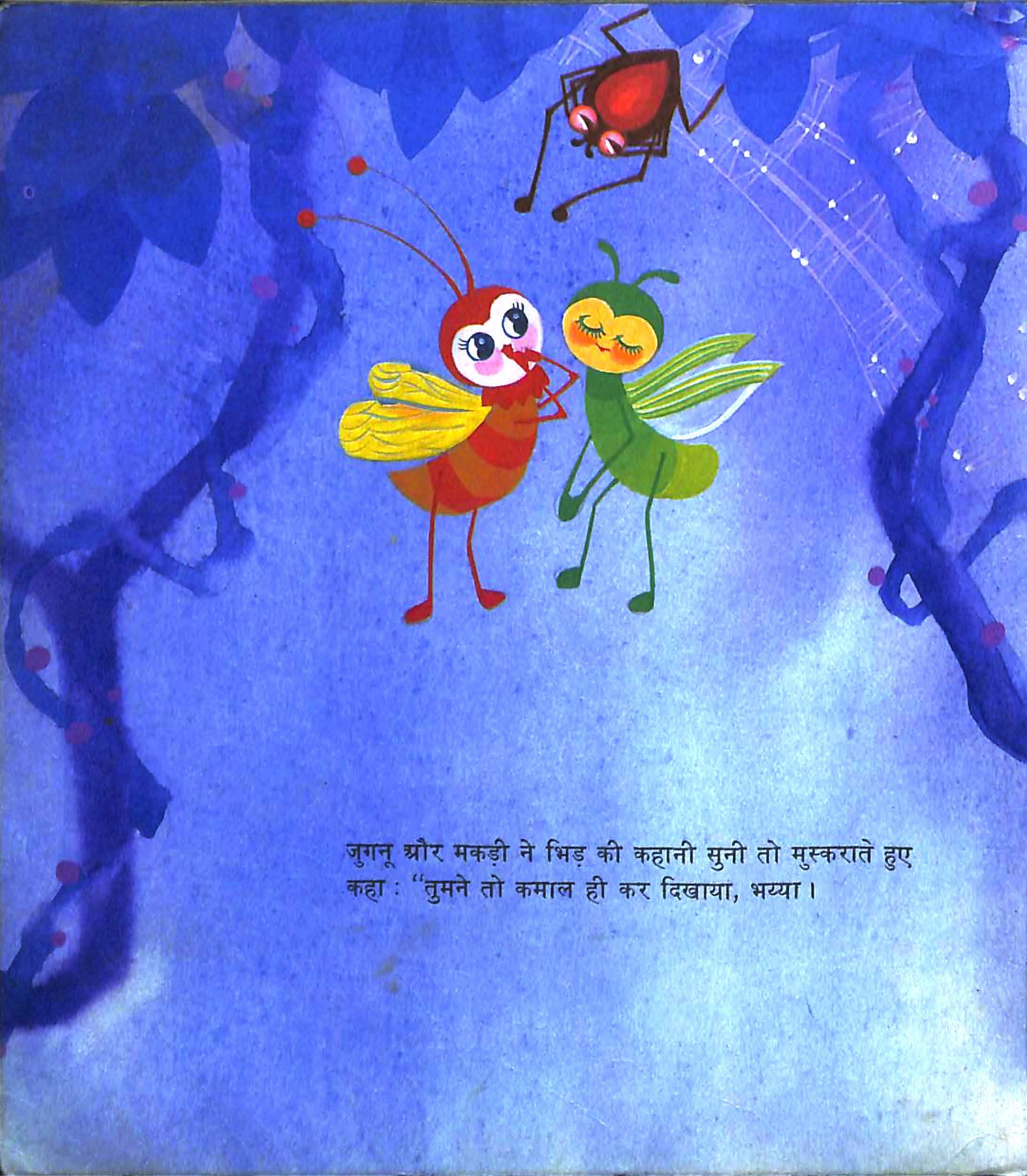
भिड़ ने यह देखा तो उसके पास जाकर बोला : "कुमारी बन्द गोभी, डरो मत। मैं अभी इसे ठिकाने लगाता हूं।" कहते-कहते उसने उसके बदन पर डंक मार दिया।



वास्तव में भिड़ ने अपने अंडे इस कीड़े के शरीर में डाल दिए थे। कुछ दिन बाद वे प्यूपा में बदल गए, और उन्होंने कीड़े को भीतर से एकदम खोखला कर दिया।

भिड़ के बच्चे बड़े हुए, और कीड़े की खाल छेदकर बाहर निकल आए। इस तरह कीड़े को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

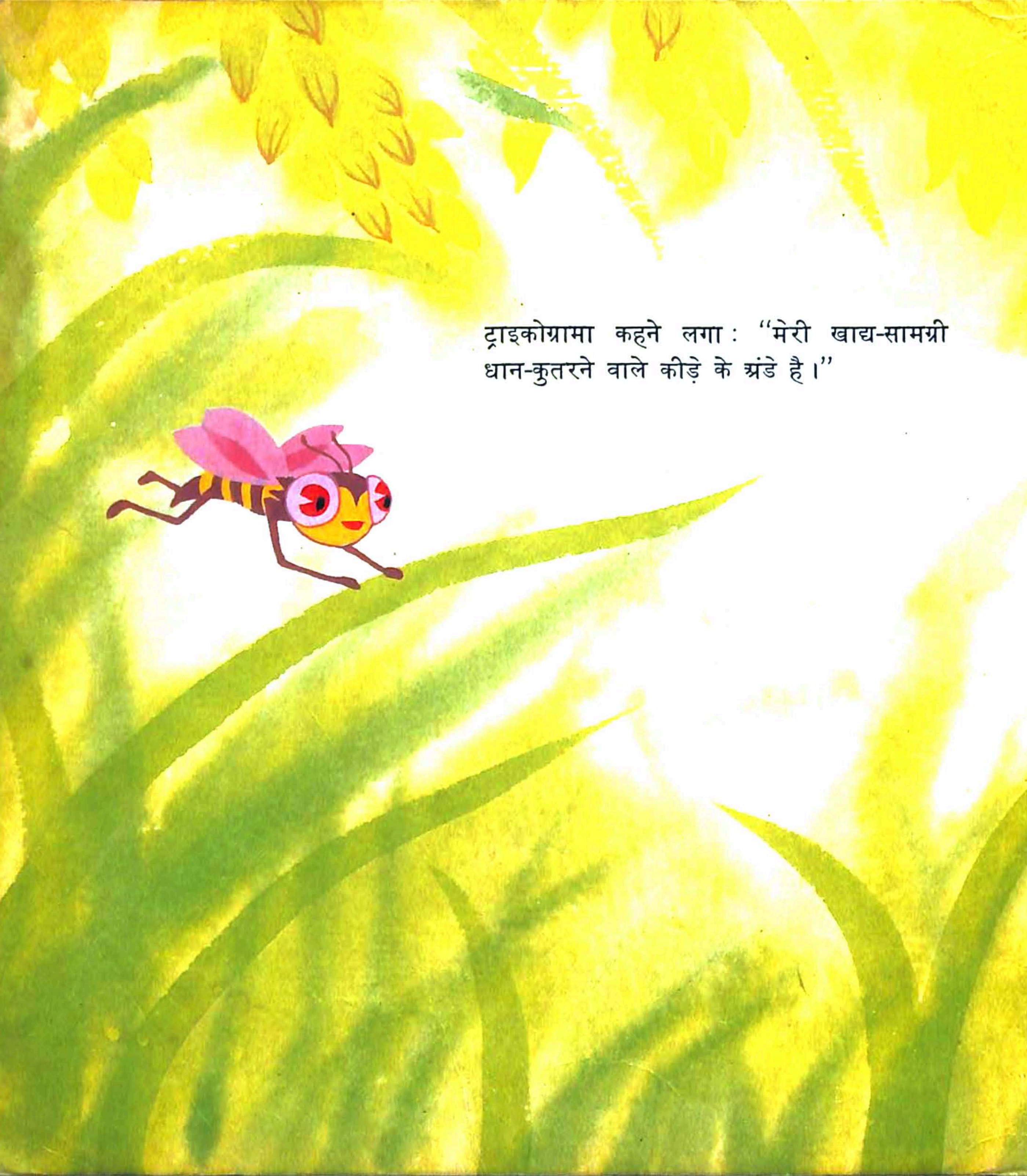




जुगनू और मकड़ी ने भिड़ की कहानी सुनी तो मुस्कराते हुए कहा : "तुमने तो कमाल ही कर दिखाया, भय्या।



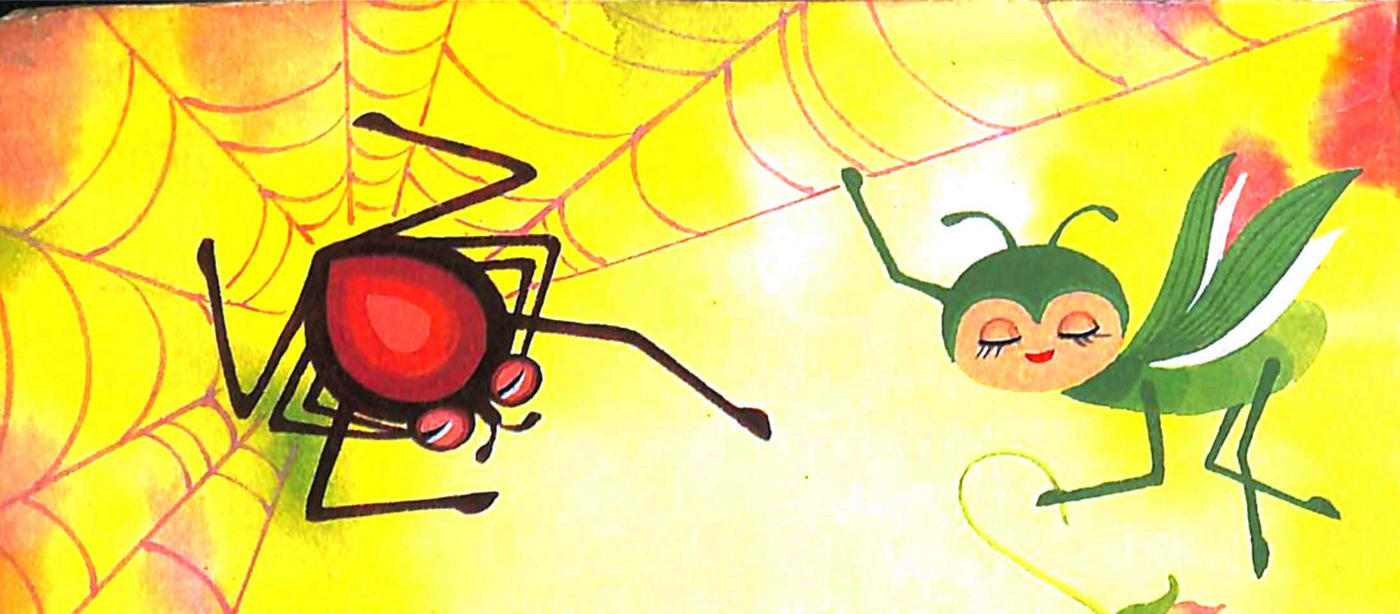
इतने में कहीं से एक ट्राइकोग्रामा उड़कर आया। उसका कद तो छोटा था, पर दो आंखें बड़ी-बड़ी और लाल-लाल थीं। कहने लगा : "अब मैं आपको अपनी खाद्य-सामग्री के बारे में बताता हूं।"



ट्राइकोग्रामा कहने लगा : "मेरी खाद्य-सामग्री धान-कुतरने वाले कीड़े के अंडे है।"



वह अपनी बात कह ही रहा था कि उसे इस कीड़े के अंडे नजर आए। उसने अपनी पूंछ से उसे डस दिया और उसमें अपने अंडे दे दिए।



ट्राइकोग्रामा ने फिर तीनों को बताया : "मेरे अंडे जब लार्वा में बदल जाते हैं, तब वे इसके अंडे खा जाते हैं।" यह सुनकर तीनों खुश हुए और कहने लगे : "हम चारों कीड़े पकड़ने में माहिर हैं, आओ! हम चारों दोस्ती कर लें!"











科学童话
四 个 捉 虫 能 手
林颂英　文
齐瑞成 庄凌　画
•
海豚出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
河漕印刷厂印刷
中国国际图书贸易总公司
（中国国际书店）发行
北京399信箱
1988年（20开）第一版
（印地）
ISBN 7-80051-121-9/J·178(外)
00175
88—H—384p